अरब में इस्लाम

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत,
आत्मानन्द तीर्थ स्वामिना विरचितः ॥

प्रकाशक : आर्य योग विद्यापीठ, खरखौदा
मेरठ, उ० प्र०,

(श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री धर्मानन्द सरस्वती
स्वामिना सहयोगेण प्रकाशितः)

प्रथम संस्करण
संवत् २०४२ वि०

भेंट [५ रुपये]

कृपया भेंट देकर ही पुस्तक लें।

॥ भूमिका ॥

इस्लाम के विषय में अनेकों लेखकों ने पुस्तकें लिखी हैं परन्तु उनसे व्यापक जानकारी प्राप्त नहीं होती। इस पुस्तक में ऐतिहासिक भूमिका के साथ इस्लाम के उदय तथा तात्कालिक परिस्थितियों के विवेचन के साथ-साथ इस्लाम की विभिन्न शाखाओं का भी संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है।

—स्वामी आत्मानन्द तीर्थ

सोमवार
फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी
२०४१ विक्रमी।
४ मार्च १९८५ ईसवी

ओ३म्

अरब में इस्लाम

संवत् २०४१ विक्रमी में कलियुग को आरम्भ हुए ५०८५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। कलियुग आरम्भ होने से ५ वर्ष पूर्व प्रभास क्षेत्र द्वारिका में समुद्र के तट पर महाराज श्री कृष्ण चन्द्र जी का १२० वर्ष की आयु में शरीरान्त हो गया था। अर्जुन ने उनका दाह संस्कार किया था।

कौरव कुल के पारस्परिक कलह के कारण कलियुग आरम्भ होने से ३८ वर्ष पूर्व भीषण संग्राम हुआ था। जिसकी आगे "महाभारत युद्ध" संज्ञा हुई। महाभारत युद्ध के समय श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज की आयु ७७ वर्ष की थी। महाभारत युद्ध में सम्पूर्ण संसार के वीरों ने भाग लिया था। महाभारत युद्ध के पश्चात विजयी महाराज युधिष्ठिर ने चक्रवर्ती सम्राट के रूप में सम्पूर्ण विश्व पर ३८ वर्ष पर्यन्त राज्य किया। कलियुग आरम्भ होने के प्रथम दिन महाराज युधिष्ठिर अपने राज्य पर अपने पौत्र परीक्षित को अभिशिक्त कर राज्य त्याग कर तपस्या करने हिमालय में चले गये थे।

महाभारत युद्ध को इस समय संवत २०४१ विक्रमी में ५१२३ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। यही युधिष्ठिर राज्यारोहण संवत है। श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज के देहावसान के उपरान्त तात्कालिक जल प्लावन में द्वारिका समुद्र के गर्भ में समा गई थी।

महाभारत युद्ध के ७७५ वर्ष पूर्व अरब में हजरत आदम की उपस्थिति का परिचय मिलता है। हजरत आदम की दसवीं पीढ़ी

में हजरत नूह ने जन्म लिया था। संवत् २०४१ विक्रमी में हजरत नूह को ४३३२ वर्ष हो गये हैं। महाभारत युद्ध के ७९१ वर्ष बाद हजरत नूह के समय अरब में जल प्लावन हुआ था। हजरत नूह के साम, हाम तथा याफिस (येपेत) नामक पुत्र थे। साम (शम) की दसवीं पीढ़ी में महाभारत युद्ध के १२३० वर्ष पश्चात हजरत इब्राहीम का जन्म हुआ था। हजरत इब्राहीम ही यहूदी तथा अरब (कुरैश) कुल के आदिम पुरुष थे। हजरत इब्राहीम के समय यरुशलेम में बहुत बड़ा मन्दिर था। वह मन्दिर भी पहिले बहुत बड़ी यज्ञशाला थी। सम्पूर्ण अरब प्रदेश के लोग उस यज्ञशाला में सम्पन्न होने वाले यज्ञों में सम्मिलित होने आया करते थे। कालान्तर में यही यज्ञशाला मन्दिर का रूप धारण कर गई। यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये आना हज कहलाने लगा। परम्परागत इस्लामी विश्वास के अनुसार वर्तमान काबा हजरत इब्राहीम का बनाया हुआ माना जाता है। परन्तु जिस समय हजरत इब्राहीम अपनी मिस्री पत्नि हाजरा तथा उसके पुत्र इस्माइल को सफा और मरवा पहाड़ी के मध्य उजाड़ सुनसान स्थान में जहाँ आज काबा है छोड़ कर आये थे। उस समय इस्माइल दूध पीता छोटा बच्चा था। (काबे का अर्थ घेरा है)

हजरत इब्राहीम के पुत्र हजरत इस्माइल की वंशावली निम्न-लिखित है।

इस्लाम अरब में
हजरत इब्राहीम
प्रथम पत्नी सारा
मिस्री पत्नी हाजरा
इसहाक
(यहूदी कुल)
इस्माइल
(अरब कुल)
कुरेश
(कस्सा १५वीं पीढ़ी)
अब्द मन्नाफ (९वीं पीढ़ी)
हाशिम
अब्दुल शम्स
अब्दुल मुतलिब,
उमैया,
मुआबिया
यजीद
अब्दुल्ला
अब्बास,
अबूतालिब
मुहम्मद
अली
हसन
हुसैन
पत्नी खदीजा,
पत्नी मारिया कुबतिया
कासिम, (अल्पायु (पुत्र
तैयब ताहिर, (अल्पायु) (पुत्र)
जनब, (पुत्री) (अल्पायु)
रुकैया, पुत्री (पत्नी उस्मान)
कुलसुम, पुत्री (पत्नी उस्मान)
फातिमा (पुत्री पत्नी अली)
इब्राहीम पुत्र (अल्पायु)

हजरत मोहम्मद साहब का जन्म सोमवार ५ अप्रैल ५७१ ईसवी अर्थात् ६२८ विक्रमी में मक्के में हुआ था। ६१ वर्ष की आयु में मदीने में मई ६२३ ईसवी अर्थात् ६८९ विक्रमी में शरीरान्त हुआ था।

हजरत इब्राहीम से पूर्व सारे अरब प्रदेश में वेदों का प्रचार था। यद्यपि महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व वैदिक परम्परा और वैदिक संस्कृति का पतन आरम्भ हो गया था। फिर भी आज से ३८९३ वर्ष पूर्व तक अरब में वेदों के प्रभाव का पता चलता है अर्थात् हजरत इब्राहीम के समय अरब में एकेश्वरवाद तथा वेदों का प्रचार था। बृहद् यज्ञशालायें थीं जिनमें बड़े-बड़े यज्ञ सम्पन्न होते रहते थे।

इन यज्ञशालाओं में सम्पन्न होने वाले बृहद् यज्ञों में सम्मिलित होने के लिये समस्त विश्व के आर्य जन पधारते थे। वन में निवास करते समय महाराज पाण्डु ने अपनी पत्नी महारानी कुन्ती से सुदूरस्थ देश में सम्पन्न होने वाले यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये जाने वाले ऋषियों के साथ जाने की अनुमति मांगी थी। उस समय यात्रा में होने वाली कठिनाइयों का वर्णन करते हुये महारानी कुन्ती ने महाराजा पाण्डु के यात्रा में जाने के विषय में सर्वथा असहमति व्यक्त की थी। यज्ञ में सम्मिलित होने विषयक यही यात्रा परिवर्तित होकर आज तक हज नाम से प्रचलित चली आ रही है। यज्ञ का दूसरा नाम मख है। इसी मख शब्द से यज्ञीय स्थल (यज्ञशाला) का नाम मक्का (मखालय) पड़ा।

हजरत मोहम्मद साहब के जन्म से २३०० वर्ष पूर्व अर्थात् आज से ३७८४ वर्ष पूर्व लबी बिन अख्तर बिन तुरफा अर्थात्

तुरफा के पुत्र अख्तर, अख्तर के पुत्र लबी नामक अरब के महान कवि ने वेदों के विषय में लिखा :—

१. अय मुबारकल अर्ज यू शर्अ यू नहामिनल-नूहामिनल ।
हिन्द ए फराद कल्लहो मयान ज्जे लाजिकातुन ।।

शब्दार्थ :—(अय) हे (मुबारकल) धन्य, (अर्ज यू) सन्देश, (शर्अ यू) धर्म शास्त्रीय, (नहामिनल) प्रशस्ति योग्य, (हिन्दे) भारत के, (फराद) केवल, (कल्लहो) सत्य मार्ग दर्शक, (मयानज्जे) अमृतमय, (लाजिकातुन) प्रकाशपुञ्ज ।

अर्थ :—हे भारत की पुन्य भूमि तू धन्य है क्योंकि ईश्वर ने अपने ज्ञान के लिये तुझको चुना ।

1. Oh blessed land of Hind (India) Thou art worthy revere- nce for in thee has God Revealed true knowledge of himself.

२. वहल तजल्लीयातुन एनाने सहाबी अरावतुन ।
हाजा यूनज्जेलो रसूलो जीकतान मिनल हिन्दतुन ।।

शब्दार्थ :—(वहल) ध्यान देने योग्य, (तजल्लीयातुन) प्रकाश-पुञ्ज, (ऐनाने) वास्तविक, (सहाबी) मैत्रीपूर्ण, (अरावतुन) मार्ग दर्शक, (हाजा) पवित्र, (रसूलो) ऋषि, (जीकतान) पात्र, (मिनल) से (हिन्दतुन) भारत से ।

अर्थ :—ईश्वरीय ज्ञान स्वरूप ये चारों पुस्तकें (वेद) जो हमारे मानसिक बलों को किस आकर्षक और शीतल ऊषा की ज्योति को देती हैं । परमेश्वर ने अपने पैगम्बरों अर्थात् ऋषियों

के हृदयों में इन चारों वेदों का प्रकाश भारत में किया ।

2. What a pure light do these four Revealed books afforded to our minds eyes like the charming and cool lusture of the down. These four Revealed into his prophets (Rishis) in India.

३. यकलुनल्लाह या अहलल अर्ज यू आलमीन कुल्लहुम ।
फतवे आजिकातूल वेद हक्कन मालम युनज्जेलो लहुम-लहुम ।।

शब्दार्थ :—(यकूलुन) अनुपम, (अल्लाह्) भगवान, (या) है, (अहलल) अत्यन्त मधुर, (अर्ज यू) उपदेश, (आलमीन) विश्व के लिये (कुल्लहुम) सब के लिये, (फतवि) धार्मिक सन्देश, (आजिकातुल) प्रकाशमय, (वेद) वेद, (हक्कन) वास्तविक, (यूनज्जे) परमात्मा, (लहुम) प्रकाशित करता है ।

अर्थ :—पृथिवी पर रहने वाली सब जातियों को ईश्वर उपदेश करता है कि मैंने वेदों में जिस ज्ञान को प्रकाशित किया है उसको तुम अपने जीवनों में क्रियान्वित करो । उसके अनुसार आचरण करो । निश्चय से परमेश्वर ने ही वेदों का ज्ञान दिया है ।

3. And be thus teaches all races of mankind that inhabit his earth observe in your lives the knowledge. I have revealed in the vedas for surely God has Revealed them.

३. बहोव आलम उस्साम बल यजुर मिनल्लहे तनजीलन ।
फ ऐनमा भा युर्वो मुत्तवे अनयू व मरेयू नजातन ।।

शब्दार्थः—(बहवालम) संसार को ईश्वर भली भांति जानता

है। (उस्साम) सामवेद, (वल यजुर) यजुर्वेद, (मिनल्लहे) अल्लाह् की ओर से, (तनज़ीलन) अवतरित हुये । (फ ऐनमा) जहां कहीं भी (युर्वो) अरब के, (यो मुत्तवे) जो भक्त, (अन) से, (यो) जो, (ब मरेयो) मरणधर्मा, (नजातुन) मुक्तिप्रद ।

अर्थ :—साम और यजुर वे खजाने हैं जिन्हें परमेश्वर ने दिया है। ऐ मेरे भाइओ तुम इनका आदर करो क्योंकि ये मुक्ति का समाचार देते हैं।

4. These treasuries Sam and yajur which God has published oh my brothers revere for they tell us the goodness of salvation-

५. व असनैने इयारिक व अतरना सहीनक अखूवतुन ।
व अस्नात अला अदन वहोव अश्र अखुन ।।

शब्दार्थ :—(व असनैने) और उज्जवल प्रकाशपूर्ण, (इया) विशेष कर, (रिक) ऋग्वेद, (व अतरना) और अथर्ववेद, (स हीनक) ठीक, (अखूवतन) भ्रातृत्व, (व अस्नात) और उज्जवल, (अला) सम्मान, (अदन) स्वर्गीय, (वहोव) वह परमात्मा, ऋषि, (अश्र) गुण, (अखुन) भ्रातृत्व ।

अर्थ :—इन चारों में से ऋग्वेद और (अतरना) अथर्ववेद हमें विश्व भ्रातृत्व का पाठ पढ़ाते हैं। ये ज्योति स्तम्भ जो हमें उस लक्ष्य विश्व भ्रातृत्व की ओर अपना मुंह मोड़ने की चेतावनी देते हैं।

5. The two next oft hese four Rigveda and Atharvaveda (atar) teach us lesson's of universal brotherhood. These two Veda's are the becon's that warn us to turn towards brotherhood.

वेदों से सम्बन्धित यह मूल अरबी कविता बगदाद के अब्बासी वंश के प्रसिद्ध खलीफा हारून अल रसीद (७८६ ईसवी से ८०६ ईसवी) के दरबार में बगदाद में प्रसिद्ध कवि (मलिकुश्शोरा) "अस्मई" द्वारा पढ़ी गई थी। यह अरबी काव्य संग्रह "सोरुलउकूल" नाम से पुस्तक रूप में बैस्ट पब्लिसिंग कम्पनी वैस्ट पैलेस्टाइन ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक भारत में "हाजी हमजा शीराजी एण्ड को०" पब्लिसर्स एण्ड बुकसेलर्स बन्दर रोड बम्बई" से उपलब्ध है। यह कविता सीरुल उकूल में ११८ पृष्ठ पर है।

अरब प्रदेश का नाम हजरत आदम की दसवीं पीढ़ी में उत्पन्न अरब नामक व्यक्ति के वंश के फैलने से अरब पड़ा। अरब की छठी पीढ़ी में हजरत इब्राहीम का जन्म हुआ था। महाभारत युद्ध के १२३० वर्ष बाद हजरत इब्राहीम का जन्म हुआ था। हजरत इब्राहीम के समय अरब प्रदेश में मूर्ति पूजा का पूरा प्रभाव था। हजरत इब्राहीम द्वारा ताइफ के क्षेत्र में काबा नामक उपासना गृह बनाकर उसमें दो पाषाण स्थापित किये जाने का उल्लेख मिलता है। जिनमें से काला पत्थर "संगे असवद" (अश्वेत पत्थर) के नाम से काबे के उपासना स्थल में आज भी विद्यमान है। संगे असवद का चुम्बन लेना प्रत्येक हाजी के लिये अनिवार्य है। इस्लामी मान्यताओं के अनुसार संगे असवद का चुम्बन लेना अत्यन्त पुण्यदायक माना जाता है।

हजरत इब्राहीम के छोटे पुत्र इसहाक के वंशज याकूब से इस्रायली वंश आरम्भ हुआ। हजरत इसहाक के वंश में ही हजरत सुलेमान व मूसा आदिक नबी हुये।

23.03.2013

काबे के आरम्भ से ही संगे असवद माननीय पाषाण के रूप में हजरत इब्राहीम द्वारा प्रस्थापित माना जाता है। हजरत इब्राहीम के वंश में कुरैश (कस्सा) नामक व्यक्ति हुआ। जिसके कारण अरबों का एक कुल कुरैश कहलाया। हजरत कुरैश काबे के प्रथम खलीफा थे। काबे के इन खलीफाओं की परम्परा निरन्तर आगे बढ़ती रही। हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व इनके पिता हजरत अब्दुल्ला काबे के खलीफा थे। इस्लामी मान्यताओं के अनुसार हजरत इब्राहीम एकेश्वरवादी थे। परन्तु काबे में हजरत इब्राहीम द्वारा संगे असवद (पत्थर) को सम्मानीय रूप में प्रस्थापित किया जाना विचारणीय है।

हजरत कुरैश के पश्चात् काबे में उनकी समाधि पर स्मारक के रूप में शिवलिङ्ग सर्वप्रथम स्थापित किया गया। हजरत अब्दुल्ला के खलीफा होने के समय काबे में समाधि के रूप में स्थापित शिवलिङ्गों तथा विभिन्न प्रतिमाओं की संख्या तीन सौ साठ हो चुकी थी। हजरत अब्दुल्ला के समय कावा एक विशाल शिवालय का रूप धारण कर चुका था। हजरत मुहम्मद साहब के परिवार के चाचा उमर बिन एहसाम ने जो काबे की रक्षा हेतु मुहम्मद साहब तथा उनके साथियों से लड़ते हुये मारे गये थे अपनी कविता में काबे तथा भारत के विषय में बड़े आदर के साथ वर्णन किया है। उमर बिन एहसान अरब प्रदेश के बहुत बड़े कवि थे। सीरूल उकूल पुस्तक के पृष्ठ २३५ पर महान कवि उमर द्वारा रचित कविता विद्यमान् है जो निम्नलिखित है—

क़फ़ विनक ज़िकरा मिन उलूमिन तव असेरू ।
कलुवन आमातातुल हवा च तजक्करन ।।१।।

अर्थ—वह मनुष्य जिसने सारा जीवन पाप व अधर्म में बिताया हो, काम क्रोध में नष्ट किया हो।

न तजखे रोहा उड़न एलल वद ए लिलवरा ।
वलुक एने जातल्लाहे औम तव असेरन ।।२।।

अर्थ—यदि अन्त में उसको पश्चाताप हो और भलाई की ओर लौटना चाहे तो क्या उसका कल्याण हो सकता है।

व अहालोलहा अजहू अरामीमन महादेव ओ ।
मनोजे़ल इलमुद्दीने मीन हुम व सयत्तरन ।।३।।

नोट—एक बार भी सच्चे हृदय से वह महादेव की पूजा करे तो धर्म मार्ग में उच्च से उच्च पद पा सकता है।

व सहबी के याम फीम कामिल हिन्दे यौगन ।
व यकूलन न लावहज़न फ इन्नक तवज्जरन ।।४।।

अर्थ—हे प्रभु मेरा समस्त जीवन लेकर केवल एक दिन भारत के निवास का दे दो, क्योंकि वहाँ पहुचकर मनुष्य जीवन मुक्त हो जाता है।

म अस्सरारे अख़लाकन हसनन कुल्लहुम ।
न जुमुन अजा अत शुम्मा गबुल हिन्दू ।।५।।

अर्थ—वहाँ की यात्रा से सारे शुभ कर्मों की प्राप्ति होती है और आदर्श गुरुजनों का सत्संग मिलता है।

उस काल में समस्त अरब तथा उसके समीप के प्रदेशों के लोग मक्का में हज करने के लिये आकर काबे में उन मूर्तियों की पूजा करते थे। हज यात्रियों से प्राप्त धन कुरैश वंश की आय का मुख्य साधन था। हजरत मुहम्मद साहब जिस समय अपनी माता आमिना के गर्भ में थे, उस समय उसके पिता काबे के तत्कालीन खलीफा हजरत अब्दुल्ला की मृत्यु हो गई। इनकी मृत्यु के उपरान्त इनके परिवार के चचेरे भाई हजरत अबूजहल काबे के खलीफा हुये तथा हजरत अबूलहब काबे के मुन्तजिम (प्रबन्धक) बने। हजरत मुहम्मद साहब को माता आमिना को काबे की आय में से गुजारा देना निश्चित हुआ। गुजारा देना निश्चित तो हो गया परन्तु दिया कभी नहीं गया।

सोमवार ५ अप्रैल ५७१ ईसवी अर्थात् सम्वत् ६२८ विक्रमी को मक्के के कुरैश परिवार में हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व इनके पिता हजरत अब्दुल्ला की मृत्यु हो जाने के कारण इनका पालन पोषण इनके दादा अब्दुल मुतलिब ने किया। अत्यधिक दुःखी होने के कारण इनकी माता आमिना का दूध सूख गया था। इसलिये हजरत अब्दुल मुतलिब की दासी साबिआ ने कुछ दिन इन्हें अपना दूध पिलाया। पश्चात् हलीमा नामक दासी ने इन्हें अपना दूध पिलाकर पाला। हजरत मुहम्मद साहब के जन्म के लगभग तीन वर्ष बाद मक्के से अपने मायके मदीना जाते हुए इनकी माता आमिना का देहान्त हो गया। हजरत मुहम्मद साहब के छः वर्ष के होने पर इनके दादा अब्दुल मुतलिब का देहान्त हो गया।

हजरत अब्दुल मुतलिब की मृत्यु होने पर हजरत मुहम्मद साहब के चाचा हजरत अबूतालिब ने इनका पालन पोषण किया। हजरत मुहम्मद साहब को अपना छः वर्ष से अठारह वर्ष तक का जीवन भेड़ बकरी आदिक पशु चराते हुए कठिन आर्थिक कठिनाइओं में बिताना पड़ा। अठारह वर्ष की आयु में हजरत मुहम्मद साहब ने मक्के की धनाढ्य कुरैश महिला खदीजा के यहाँ नौकरी कर ली। खदीजा व्योपार के लिये बाहर सामान भेजा करतीं थीं। हजरत मुहम्मद साहब इन व्योपारियों के साथ बाहर जाने लगे। खदीजा विधवा थीं। ४० वर्ष की आयु में खदीजा ने पच्चीस वर्षीय हजरत मुहम्मद साहब से विवाह कर लिया। खदीजा ने विवाह के बाद अपना एक सेवक जैद हजरत मुहम्मद साहब को दे दिया। जिसे हजरत मुहम्मद साहब पुत्रवत मानते थे। कुछ काल के बाद जैद का विवाह एक सुन्दर महिला जैनब से कर दिया। खदीजा से विवाह होने पर भी हजरत मोहम्मद साहब काबे की सम्पत्ति और खिलाफत विषयक अपने पैतृक अधिकार को नही भूल सके। गारे हिरां (हिरां पहाड़ की गुफा) में एकान्त में रहकर वे इस विषय पर निरन्तर चिन्तन किया करते थे। अन्ततोगत्वा परिणामस्वरूप इकतालीस वर्ष की आयु में प्रथम बार हजरत मुहम्मद साहब ने अपने ऊपर आयतें उतरने और स्वयं को नबी होने की बात कही।

खदीजा ने हजरत मोहम्मद साहब को अल्लाह् का रसूल (नबी) मानकर उनके मत इस्लाम को स्वीकार कर लिया। खदीजा प्रथम मुसलमान थीं।

कुछ काल बाद हज के समय हजरत मोहम्मद साहब ने अपने

23.03.2013

१६ साथियों अबूबकर आदिक के साथ काबे में जाकर नमाज पढ़ी तथा हजरत अबूबकर ने हजरत मोहम्मद साहब के अल्लाह का रसूल होने का खुतबा पढ़ा (घोषणा की)। इस घटना से मक्के के प्रतिष्ठित कुरंश सरदार एवम् काबे के खलीफा अबूजहल तथा अबूलहब आदि अत्यन्त रुष्ट हुये और इन सबको अपमानित करते हुये प्रताड़ित किया। इन्हीं दिनों हजरत मुहम्मद साहब के साथ शबे मैराज (स्वर्गीय दर्शन की रात्रि) की घटना घटी। इस्लामी विश्वास के अनुसार एक रात्रि को हजरत मोहम्मद साहब बुर्राक (श्वेत वर्ण स्त्री मुख वाले पंख युक्त अश्व) पर चढ़कर मध्य में बैतल ए मुकद्दस (पवित्र स्थान यरूशलेम) पर कुछ देर रुककर जन्नत में गये। जहाँ अल्लाह से बातें कीं।

हजरत मोहम्मद साहब निरन्तर अपने मत का प्रचार करते रहे। साथ ही अपनी आर्थिक कठिनाइयों पर चिन्तन करते हुये काबे की सम्पदा पर भी दृष्टिपात करते रहते थे। इसी तरह विरोधाभासमय जीवन व्यतीत करते हुये दस वर्ष बीत गये। इसी मध्य खदीजा से दो पुत्र कासिम तथा तैयब ताहिर एवम् चार पुत्रियां जैनब, रुकैया, कुलसुम, तथा फातिमा उत्पन्न हुई। हजरत मोहम्मद की पचास वर्ष की आयु होने पर इनके चाचा अबूतालिब की मृत्यु हो गई। हजरत अबूतालिब ने हजरत मोहम्मद साहब के बहुत कहने पर भी अपने अन्तिम समय तक इस्लाम स्वीकार नहीं किया। इसी वर्ष पैंसठ वर्ष की आयु में खदीजा भी मर गई। इस समय हजरत मोहम्मद साहब के साथ कुरैशों का विरोध अत्यधिक बढ़ गया।

सम्वत् ६७६ विक्रमी अर्थात् १२ जौलाई ६२२ ईसवी को इक्यावन वर्ष की आयु में हजरत मोहम्मद साहब मक्का छोड़कर अपनी ननसाल मदीना चले गये। हजरत मोहम्मद साहब के मक्का छोड़कर मदीना जाने के समय से हिजरी सन् आरम्भ हुआ। इनके साथ मक्का छोड़कर मदीना जाने वाले मुहाजिर कहलाये तथा मदीने के इनके साथी अन्सार कहलाये।

खदीजा की मृत्यु के बाद हजरत मोहम्मद साहब ने मदीना आकर विधवा सूदा से विवाह कर लिया। लगभग इसी काल में इनके पोषित जैद ने अपनी पत्नी जैनब को त्याग दिया। कुछ काल बाद हजरत मोहम्मद साहब ने जैनब को पत्नी बना लिया। अपने साथी हजरत अबूबकर की ६ वर्षीय पुत्री आयशा से हजरत मोहम्मद साहब ने ५३ वर्ष की आयु में विवाह कर लिया। अपने मित्र हजरत उमर की पुत्री हफसा से भी आपने विवाह कर लिया। हजरत मोहम्मद साहब की विवाहित तथा गृहीत पत्नियों के नाम निम्नलिखित हैं।

१. खदीजा, २. सूदा, ३. हफसा (उमर की पुत्री, ४. आयशा (अबूबकर की पुत्री), ५. हिन्दसा, ६. जैनब, ७. रेहाना, ८. जवेरिया, ९. मेमूना (हजरत अब्बास की विधवा), ११. मारिया कुर्बतिया, १९. सफीया, १२. उम्मे सलमा, १३. उम्मे हबीबह।

खदीजा से उत्पन्न दोनों पुत्र कासिम तथा तयबताहिर एवम् पुत्री जैनब अल्पायु हुए। खदीजा की दूसरी पुत्री रुकैया का विवाह हजरत उस्मान से कर दिया। रुकैया की मृत्यु हो जाने पर खदीजा की तीसरी पुत्री कुलसुम का विवाह भी हजरत उस्मान से ही कर दिया। खदीजा की छोटी पुत्री फातिमा का विवाह अपने

चाचा अबूतालिब के पुत्र हजरत अली से कर दिया। हजरत अली तथा फातिमा के दो पुत्र हजरत हसन तथा हजरत हुसैन थे। इस प्रकार हजरत अबूबकर तथा हजरत उमर, हजरत मोहम्मद साहब के श्वसुर तथा हजरत उस्मान तथा हजरत अली, हजरत मोहम्मद साहब के दामाद थे। मारिया कुबंतिया से भी हजरत मोहम्मद साहब के एक पुत्र जिसका नाम इब्राहीम था उत्पन्न हुआ। जो दस साल की आयु में सन् १० हिजरी में मर गया।

सम्वत् ६८० विक्रमी में बदर के स्थान पर हजरत मोहम्मद साहब की मक्का के कुरैशों के साथ घोर लड़ाई हुई। इस लड़ाई में मक्का के बड़े-२ सरदार तथा काबे के खलीफा अबूजहल एवम् अबूलहब आदिक मारे गये।

सम्वत् ६८२ विक्रमी में मदीने के समीप रवाई में निवास करने वाली जातियों पर आक्रमण कर हजरत मोहम्मद साहब ने विजय प्राप्त की।

सम्वत् ६८३ विक्रमी में अहद के स्थान पर हजरत मोहम्मद साहब तथा कुरैशों के मध्य भयानक लड़ाई हुई। हजरत मोहम्मद साहब के हाथ से बर्छे द्वारा ओबई नामक व्यक्ति मारा गया। परन्तु मुसलमानों की भयानक हार हुई और इब्ने कुमैया ने पत्थर मारकर हजरत मोहम्मद साहब के दांत तोड़ दिये।

सम्वत् ६८४ विक्रमी में हजरत मोहम्मद साहब ने बनी मस्तलक पर चढ़ाई करके उन्हें लूट लिया।

सन ६ हिजरी में हजरत मोहम्मद साहब उमरा (छोटा हज) करने की दृष्टि से मक्के की ओर चले। मक्के से कुरैशों के आ जाने पर हुदैबिया के स्थान पर कुरैशों से सन्धि हो गई। जिससे आगामी वर्ष हजरत मोहम्मद साहब द्वारा हज करना निश्चित हुआ। सन्धि पत्र में हजरत मोहम्मद साहब ने हस्ताक्षर करते समय "मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह" लिखा।

इस पर कुरैश सुहैल ने घोर आपत्ति की और कहा "मुहम्मद बिन अब्दुल्ला" लिखो। तब स्वयं हजरत मोहम्मद साहब ने "मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह" काटकर "मुहम्मदबिन अब्दुल्ला लिखा"। हजरत मोहम्मद साहब सर्वथा अनपढ़ नहीं थे।

सन् ८ हिजरी में हजरत मोहम्मद साहब ने अपने साथियों के साथ सशस्त्र हज के लिये काबे की यात्रा की। मक्का पहुंच कर समस्त विरोधियों को मार डाला। काबे में संगेअसबद को छोड़-कर समस्त मूर्तियों को तोड़ डाला। स्वयं को अल्लाह का रसूल घोषित कर दिया।

सम्वत् ६८८ विक्रमी में हुनैन पर आक्रमण कर उसे लूट लिया।

सम्वत् ६८९ विक्रमी, ८ जुन ६३२ ईसवी अर्थात् सन् १० हिजरी में हजरत मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई और आपको आपके द्वारा बनाई मस्जिद की बगल में मदीने में दफना (गाड़) दिया।

इस्लाम शब्द का अर्थ "शान्ति का मार्ग" है। मुस्लिम शब्द का अर्थ "शान्ति के मार्ग पर चलने वाला है।

अस्सलामालेकम का अर्थ "मैं शान्ति के मार्ग में विश्वास रखता हूं"। यह निर्णय करना ऐतिहासज्ञों का काम है कि मुस्लिम और इस्लाम का शान्ति से कितना और कैसा सम्बन्ध है।

इस्लाम के उत्पन्न होने के मूल कारणों पर चिन्तन करने पर निम्नलिखित कारण स्पष्ट होने लगते हैं।

१. हजरत मोहम्मद साहब के जन्म से पूर्व हजरत मोहम्मद साहब के पिता तथा काबे के महन्त हजरत अब्दुल्ला की मृत्यु हो जाना।

२. हजरत मोहम्मद साहब की माता आमिना को उनके पति, काबे के खलीफा हजरत अब्दुल्ला की मृत्यु पर काबे की आय में से जो गुजारा दिया जाना निश्चित हुआ था, कभी नहीं दिया गया।

३. मक्के के कुरैशों द्वारा काबे के धन से ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताना तथा हजरत मोहम्मद साहब का निर्धनता पूर्ण बाल्यकाल।

४. हजरत अब्दुल्ला की मृत्यु के पश्चात् काबे के तत्कालीन खलीफा हजरत अबूजहल के स्थान पर वयस्क होने के उपरान्त भी हजरत मोहम्मद साहब को काबे की खिलाफ़त न मिलना।

५. हजरत मोहम्मद साहब का पच्चीस वर्ष तक विवाह न होना तथा पच्चीस वर्ष की आयु में चालीस वर्षीय विधवा खदीजा से विवाह।

इस्लाम से पूर्व की प्रथाएं, हज, कुर्बानी तथा काबे का तवाफ (परिक्रमा) पूर्ववत आज भी विद्यमान हैं।

काबे के चारों तरफ इस्लाम से पूर्व तवाफ होता था और आज भी होता है। जो काबे के प्रति श्रद्धा और निष्ठा का प्रतीक है।

उपरोक्त समस्त परिस्थितियों पर विचार करने के पश्चात् ही हजरत मोहम्मद साहब ने स्वयं को अल्लाह का रसूल (दूत) घोषित किया था। हजरत मोहम्मद साहब इस्लाम के पैगम्बर तथा स्वयं के द्वारा स्थापित इस्लामी राज्य के एकमात्र शासक थे। उनके समय का इस्लामी राज्य का विधान कुरआन तथा उनकी अपनी सम्मति (हदीस) थी। हजरत मोहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् ६८९ विक्रमी में हजरत अबूबकर इस्लामी उम्मत (सम्प्रदाय) के खलीफा तथा इस्लामी राज्य के शासक बने। सम्वत् ६९१ विक्रमी में ६३ वर्ष की आयु में, विष दिये जाने के फलस्वरूप हजरत अबूबकर मर गये। इनकी मृत्यु के पश्चात् सम्वत् ६९१ विक्रमी में हजरत उमर इब्ने खत्ताब खलीफा बने। हजरत उमर ने स्वयं को अमीरूल मोमिनीन घोषित कर दिया। सम्वत् ७०१ विक्रमी में फीरोज नामक मुसलमान ने इनको मस्जिद में नमाज़ पढ़ते समय सिजदे की हालत में कत्ल कर दिया।

सम्वत् ७०१ विक्रमी में हजरत उस्मान इब्ने मफ़ान खलीफा बने। खलीफा उस्मान ने कुरान के पाठों में भिन्नता देखकर हजरत मुहम्मद साहब की पत्नी हफ़सा के कुरान की प्रतियां कराकर चारों तरफ भेज दीं। कुरान की उपलब्ध अन्य प्रतियों को जलवा दिया फिर भी कुरान की कुछ प्रतियाँ बच गई। जिनमें से चालीस पारों युक्त कुरान की एक प्रति खुदाबख्श ओरियन्टिल पुस्तकालय

पटना में विद्यमान है। वर्तमान कुरान वायजे उस्मानी है (खलीफा उस्मान द्वारा संकलित है।) वर्तमान कुरान में तीस पारे हैं। सम्वत् ७१२ विक्रमी में अर्थात् ३५ हिजरी में मोहम्मद बिन अबूबकर ने हजरत उस्मान की हत्या कर दी। शव तीन दिन तक पड़ा रहा। अन्त में बिना नहलाये और बिना नये वस्त्र पहनाये दफना दिया। इस समय खिलाफत के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ। हजरत मोहम्मद साहब की पत्नी और हजरत मुआबिआ ने खिलाफत के पद के लिये हजरत अली का विरोध किया। अन्ततोगत्वा सम्वत् ७१२ विक्रमी अर्थात् सन् ३५ हिजरी में हजरत अली खलीफा बने। सम्वत् ७१७ विक्रमी अर्थात् सन् ४० हिजरी में अब्दुल्ल रहमान खारिजी ने नमाज पढ़ते समय हजरत अली का कत्ल कर दिया। हजरत अली के पश्चात् उनके बड़े पुत्र हजरत हसन खलीफा बने। इसी काल में दमिश्क में मुआबिआ इब्ने हकम ने स्वयं को खलीफा घोषित कर दिया तथा हजरत हसन के खिलाफत पद से त्याग पत्र दिलवा लिया। सम्वत् ७१८ विक्रमी अर्थात सन् ४१ हिजरी में विष दिये जाने से हजरत हसन की मृत्यु हो गई। हजरत मुआबिया के खिलाफत काल में काबे के स्थान पर बैतुलए मुकद्दस (यरुशलेम) हज होने लगा था।

सम्वत् ७१७ विक्रमी अर्थात सन् ४० हिजरी से सम्वत् ७२६ विक्रमी अर्थात् सन् ४९ हिजरी तक हजरत मुआबिया खलीफा रहे। उसके पश्चात् इनके पुत्र यजीद खलीफा बने। यजीद ने खलीफा बनते ही अपने सेनापति द्वारा बगदाद में करबला के मैदान में हजरत हसन को लड़ाई में मरवा दिया।

हजरत अली के समय अब्दुल्ला इब्ने वहब के साथियों ने

बगदाद से थोड़ी दूर नहरवां नामक गांव में अपना डेरा डालकर अब्दुल्ला इब्ने वहब को अपना खलीफा घोषित कर दिया। ये लोग खार्जी कहलाये। अरब के वर्तमान शासक वहाबी मत के ही हैं। काबा इन्ही वहाबी मत के शासको के अधिकार में है।

हजरत मुआबिआ के खलीफा बनते ही इस्लाम के अनुयायियों में मतभेद पैदा हो गये। हजरत अली के अनुयायियों ने मक्के में अपना खलीफा अलग बना लिया। हजरत मुआबिया को खलीफा मानने वाले भातरी दिया या सुन्नी कहलाये। जो लोग हजरत मुहम्मद साहब के पश्चात् हजरत अली को ही खलीफा मानते थे तथा हजरत अली के खलीफा पद की प्राप्ति में सहायक थे और हजरत अली की ओर से बलिदान भी करते थे, वे मोखले सीन कहलाये। मोखले सीन का नाम ही आगे चलकर शिया पड़ा। शिया तथा सुन्नी सम्प्रदायों में निम्नलिखित मतभेद हैं—

१. शिया तथा सुन्नियों के नमाज पढ़ने में अन्तर है।

२. शिया तथा सुन्नियों द्वारा कुरान में आयतों के नासिख (निरस्त करने वाली आयतें) और मन्सूख (निरस्त) होने के विषय में मतभेद है।

३. शिया तथा सुन्नी दोनों भिन्न इमामों को मानते हैं। सुन्नी चार इमाम मानते हैं। शिया बारह इमाम मानते हैं।

४. सुन्नी हजरत मोहम्मद साहब के बाद हजरत अबूबकर, हजरत उमर, हजरत उस्मान तथा हजरत अली, चारों खलीफाओं

को मानते हैं। शिया हजरत मोहम्मद साहब के पश्चात् केवल हजरत अली को खलीफा मानते हैं।

५. शिया तथा सुन्नी दोनों की हदीसें अलग अलग हैं।
६. शिया तथा सुन्नी दोनों के उत्तराधिकार नियमों में अन्तर है।

खारिजी (बहाबी) हजरत मोहम्मद साहब के अतिरिक्त किसी खलीफा को नहीं मानते हैं।

सन् ५१ हिजरी में हजरत फज बिन बस्कुक सरकशी कुनीयत (उपनाम) नासिर ने काबे के चारों तरफ नमाज पढ़ने के लिये चार मुसल्ले स्थापित किये।

प्रथम इमाम अबू हनीफा नौमान बिन साबित सन् ८० हिजरी में उत्पन्न हुये। अबू हनीफा कुनीयत (उपनाम) था। सन् १५० हिजरी में मर गये।

द्वितीय इमाम मालिक अब्दुल्ला बिन अन्स बिन मालिक बिन आमर सन् ९३ हिजरी में मदीने में उत्पन्न हुए तथा सन् १७९ हिजरी में मदीने में ही मर गये।

तृतीय इमाम साफेई 'अबू अब्दुल्ला' मुहम्मद बिन ईहस सन् १५० हिजरी में मनी अकलान स्थान में उत्पन्न हुये तथा ५४ वर्ष की आयु में मिश्र में मर गये।

चतुर्थ इमाम अहमद बिन मोहम्मद हम्बल सैबानी बगदाद में सन् १६४ हिजरी में उत्पन्न हुये।

इन चारों इमामों के आधार पर भी सुन्नी मुसलमानों में मतभेद है। सुन्नी लोगों का मस्लक (दर्शन) हनफी, मालिकी, साफेई तथा हम्बली शाखाओं में विभक्त है।

सुन्नी विद्वानों के मत में इमामों की वैचारिक भिन्नता के आधार पर तीन उप सम्प्रदाय हैं।

१. अशअरी, २. मातरीदी, ३. तथा हम्बली।

शिया सम्प्रदाय वैचारिक भिन्नता के आधार पर पांच प्रमुख शाखाओं में विभक्त है।

ये शाखाएं निम्नलिखित हैं—

१. गलात, २. केशानियां, ३. इस्माइलिया, ४. जैदीयाह, ५. तथा इमामीयाह।

सन् ३१६ हिजरी में अबूताहर कर्मतीने मक्का में हज के लिये आये हाजिओं कत्ल कर उनको जमजम के पवित्र कुएं में डाल दिया। तथा हजरे असवद (संगे असवद) को काबे की दीवार से उखाड़ कर उसके चार टुकड़े कर डाले। और संगे असवद के चारों टुकड़ों को अपने साथ ले गया। तथा पचास हजार स्वर्ण दीनार के बदले भी संगे असवद के टुकड़ों को देना स्वीकार नहीं किया। बीस वर्षों तक जब तक वह जीता रहा संगे असवद उसके अधिकार में रहा।

शिया बारह इमाम मानते हैं। उनके नामों का चित्र निम्नलिखित है—

१. हजरत अली (६५६ ई० से ६६१ ईसवी तक)

२. हसन ५०

३. हुसैन ६२

४. जैनुल आब्दीन ९६

५. जाइद १२२

५. मोहम्मद अलबकर ११३

६. जफर आस सिद्दीक १४०

७. इस्माइल

७. मूसा अल कासिम १८३

८. अली मुस्तनसीर,

८. अली अल रजा २०२

निसार, अल मुस्तवी

९. मोहम्मद अल जबैद २२०

१०. अली उल हादी २५४

११. अली हसन अल अस्करी २६०

१२. मोहम्मद अल मुन्तजर
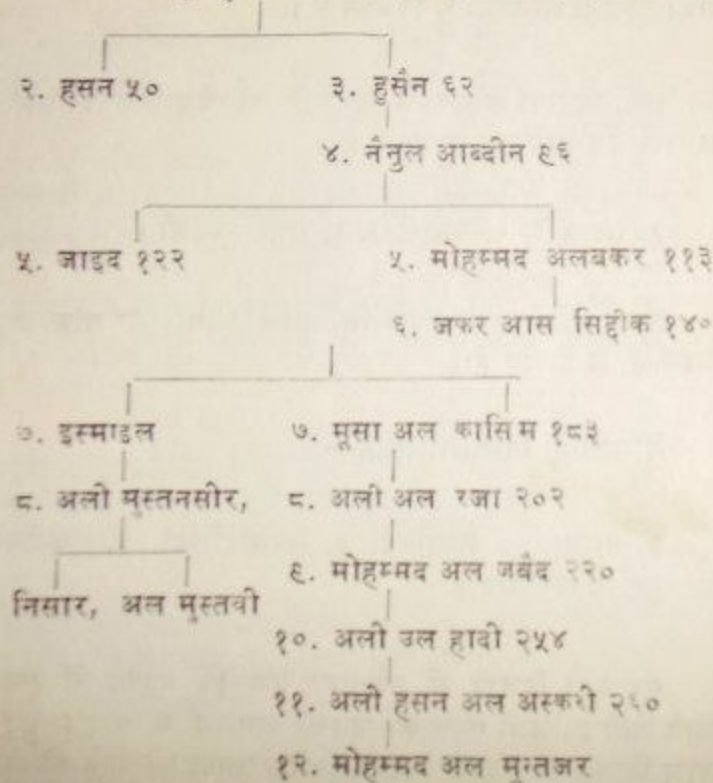
हजरत मुआविया द्वारा दमिश्क में खिलाफत स्थापित करने के समय मक्के में भी खिलाफत विद्यमान थी। सन् ७५० ईसवी में अब्बासियों ने बगदाद में खिलाफत स्थापित की। सन् ९१२ ईसवी में अब्दुल रहमान तृतीय ने स्पेन में उमवी वंश की खिला-

फत स्थापित की। फातिमी वंश ने ९०९ ईसवी में ट्यूनिश में खिलाफत स्थापित की जिसका अन्त ११७१ ईसवी में हुआ।

सन् १२५३ ईसवी में मंगोलिया के बौद्ध शासक मंगोल चंगेज खां के पौत्र हलाकू खां ने बगदाद पर आक्रमण करके तत्कालीन (अब्बासी वंश के) खलीफा की हत्या कर दी। हलाकू द्वितीय खान था। चंगेज खान के वंशज सातवें खान ने इस्लाम ग्रहण कर लिया। फातिमी वंश १५१७ ईसवी तक मिश्र देश में खिलाफत का अधिकारी रहा। सन् १५१७ ईसवी में खिलाफत ओटोमन तुर्कों के पास कुस्तुनतुनियां में चली गई। सन् १९२४ ईसवी में अंग्रेजों ने खिलाफत का अन्त कर दिया।

मुसलमान हजरत इमाम हसन तथा हजरत इमाम हुसैन की स्मृति में ताजिये निकालते हैं। ताजियों का निकालना सन् १३९८ ईसवी में तैमूरलङ्ग के द्वारा आरम्भ हुआ था।

इस्लाम का आधार प्रमुखतः चार विश्वास हैं—

१. हजरत मोहम्मद साहब पर अन्तिम नबी मानते हुये दृढ़ आस्था।

२. कुरान पर दृढ़ आस्था।

३. कुरानोक्त अल्लाह को एकमात्र उपास्य मानना।

४. हदीसों में दृढ़ आस्था।

इस्लाम के मानने वाले मुसलमानों के लिये पांच बातों को मानना आवश्यक है।

१. कल्मा, २. नमाज, ३. रोजा, ४. जकात, ५. तथा हज।

इस्लामी संगठन का आधार, इस्लाम को मजहब, कौम तथा संस्कृति मानता है। इस्लाम में हजरत मोहम्मद साहब का मत सर्वमान्य तथा सर्वोपरि है। एक मात्र कुरान में दृढ़ आस्था भी संगठन का प्रमुख आधार है। हजरत मोहम्मद साहब तथा आरम्भ के चार खलीफा हजरत अबूबकर, हजरत उमर, हजरत उस्मान तथा हजरत अली, इस्लाम के स[illegible] [illegible]कारी हु[illegible]

के साथ साथ इस्लामी संगठन तथा इस्लामी राज्य के सर्वोच्च एकमात्र अधिकारी, संगठक एवम् सेनापति भी थे। इस्लामी संगठन का एक आधार यह विश्वास भी है कि कल्मा "ला इलाह इल्लिलाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह" पढ़ने पर समस्त पापों से छुटकारा मिल जाता है।

आज तक इस्लाम में बहावी, अहमदी, शिया, सुन्नी तथा इस्मायली आदि तीन सौ बीस उप सम्प्रदाय उत्पन्न हो चुके हैं।

॥ समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥

———